“निर्यात हेतु बासमती धान के उत्पादन में गुणवत्ता सुधार” विषय पर कार्यशाला का आयोजन

बरेली 11 अगस्त 2017। आज कृषि विज्ञान केन्द्र-भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थानए इज्जतनगर एवं बासमती निर्यात विकास प्रतिष्ठानए मेरठ द्वारा “निर्यात हेतु बासमती धान के उत्पादन में गुणवत्ता सुधार“ विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें बरेली और पड़ोसी जनपदों के 314 से किसानों एवं किसान महिलाओं सहित कृषि अधिकारियोंए प्रसार अधिकारियों एवं वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए सरदार बल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालयए मेरठ के कुलपति डा. गया प्रसाद ने मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए किसानों का आह्वाहन किया कि वे खेती में कीटनाशकों का उपयोग कम करे ताकि फसल मानव जीवन के स्वास्थ्य को हानि नहीं पहुँचा सकें। उन्होंने किसानों से कहा कि वे खेती में व्यापारिक सोच विकसित करे ताकि वे खेती से ज्यादा लाभ ले सकें। महिला किसानों की तारीफ करने हुए कहा कि महिलाओं

का खेती में योगदान को देख अब तो विश्व के कृषि संगठन भी खेती में महिलाओं के महत्व को समझने को लगे हैं।

अपने भाषण में संस्थान निदेशक एवं कार्यक्रम के अध्यक्ष डा. राजकुमार सिंह ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 2022 तक किसानों की आय दुगुनी करने की चर्चा करते हुए घोषणा की कि बासमती धान के उत्पादन की तकनीकों को सिखाने के लिए संस्थान का कृषि विज्ञान केन्द्र यहाँ के किसानों की टीम को बासमती निर्यात विकास प्रतिष्ठानए मेरठ की यात्रा पर ले जायेगा। उन्होंने भारत सरकार की नई योजना ई-कृषि मंच की भी चर्चा की और कहा कि इसके माध्यम से किसान आसानी से खेती की समस्याओं का निदान प्राप्त कर सकते हैं।

इससे पूर्व बासमती निर्यात विकास प्रतिष्ठानए मेरठ के प्रधान वैज्ञानिक डा. रितेश शर्मा ने अपने व्याख्यान में बासमती धान की खेती और उससे जुड़े सभी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि सभी सुगन्धित चावल बासमती नहीं होता। अन्तर्राष्ट्रीय बाजार की चर्चा करते हुए डा. शर्मा ने कहा कि पूसा बासमती-1121 की मांग सबसे अधिक है और भारत बासमती चावल का सबसे बड़ा निर्यातक है परन्तु पिछले 3.4 वर्षों में भारतीय बासमती फेल हो रही है क्योंकि उसमेंे पेस्टीसाइड की मात्रा पाई गई है इससे देश को विदेशी मुद्रा की कमाई में कमी आई है। उन्होंने किसानों को बासमती चावल की खेती में हरी खाद तथा नियंत्रित मात्रा में पेस्टीसाइड का उपयोग करने की अपील की। डा. शर्मा ने बताया कि बासमती चावल की खेती भारत में सिर्फ पंजाबए हरियाणाए उत्तराखंडए उत्तर प्रदेश और

जम्मू-कश्मीर में की जाती हैं जबकि पाकिस्तान में सिर्फ वहां के पंजाब प्रान्त में इसकी खेती की जाती है। हमारे संगठन का उद्देश्य इस कार्यशाला के द्वारा बासमती चावल के उत्पादन में लागत घटा कर आय बढ़ाना है।

अखिल भारतीय धान निर्यातक संघ के कार्यकारी निदेशक एवं कार्यशाला के विशिष्ट अतिथि श्री राजेन सुन्दरेसन ने कार्यशाला की उपयोगिता पर कहा कि किसान कीटनाशक विक्रेताओं तथा कम्पनियों के एजेन्टों के कहने पर नहीं बल्कि नजदीकी कृषि केन्द्रों के विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार ही बासमती चावल की खेती में पेस्टीसाइड का उपयोग करें।

इस अवसर पर उपनिदेशकए उद्यान डा. मनोहर सिंहए संयुक्त निदेशकए कृषि डा. सत्यवीर सिंहए सरदार बल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालयए मेरठ के निदेशकए प्रसार डा. एस.के. सचान ने भी कार्यशाला को सम्बोधित किया। बाद में बासमती धान में गुणवत्ता सुधार पर तकनीकी सत्र का भी आयोजन किया गया जिसमें कृषि विश्वविद्यालयए मेरठ के प्रो. गोपाल सिंहए डा. पी.के. मुखर्जी ने अपना व्याख्यान दिया। इस अवसर पर किसानों के लिए एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी आयोजित की गई तथा उसमें विजयी किसानों को पुरस्कृत किया गया। प्रतियोगिता का संचालन विषय विशेषज्ञ श्री रंजीत सिंह ने किया। कार्यशाला का संचालन संस्थान स्थित कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रभारी डा. बी.पी. सिंह तथा अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन विषय विशेषज्ञ श्री राकेश पांडे ने किया। इस अवसर पर संस्थान के संयुक्त निदेशक प्रसार शिक्षा डा. ए.के. गर्गए विभागाध्यक्ष डा. महेश चन्दर तथा अन्य विभागों के वैज्ञानिकए अधिकारी उपस्थित रहे।